रिकॉर्ड:— जाग सजनियाँ जाग..... ओम शान्ती प्रातःक्लास 10-2-67

जो कुछ कहते हैं, पक्का निश्चय नहीं है उनको ऐसे-2 रिकॉर्ड घर में रखने चाहिये। जब कोई उदासी वा विस्मृती होती है तो ऐसे-2 रिकॉर्ड चलाने से स्मृती आ जावेगी। अब भगवानोवाच्यः- यह तो बाप ने समझाया है कि मनुष्य को भगवान नहीं कहा जा सकता। देवताओं को भगवान नहीं कहा जाता। देवताओं का भी आकार रूप है। मनुष्यों का साकार रूप है। बाकी परमपिता परमात्मा का न आकार रूप है, न साकार रूप है। इसलिये उनको शिव परमात्माये नमः कहा जाता है। ज्ञान का सागर वो एक ही है। कोई मनुष्य में ज्ञान हो नहीं सकता। किसका ज्ञान? रचता और रचना की आद मध्य अन्त का ज्ञान। अथवा आत्मा और परमात्मा का भी ज्ञान किसी में नहीं है। तो बाप आकर जगाते हैं:- हे सजनियां, हे भक्तियां जागो। सभी मेल अथवा फीमेल सभी भक्तियां हैं। भगवान को याद करते हैं। सभी ब्राईड्स याद करती हैं एक ब्राईड् ग्रूम को। सभी आशिक आत्मायें परमपिता माशूक को याद करती हैं। सभी सिताओं का राम है परमपिता परमात्मा। राम अक्षर क्यूं कहते हैं? क्यूं कि रावण राज्य है ना। तो इसकी भेंट में राम राज्य कहा जाता है। राम है परमपिता परमात्मा। जिसको ईश्वर भी कहते हैं, भगवान भी कहते हैं। असली नाम है उनका शिव। तो अभी बाप कहते हैं जागो। अभी नवयुग आता है। पुराना खत्म होता है। इस महाभारत लड़ाई बाद सतयुग स्थापन होता है और यहाँ इन ल. ना. का राज्य होगा। पुराना कलियुग खत्म हो रहा है। अभी बाप कहते हैं जागो। कुम्भकर्ण की नींद छोड़ो। नई दुनिया आती है। नई दुनियां को स्वर्ग सतयुग कहा जाता है। यह है नया रस्ता। यह नया रास्ता घर जाने का वा स्वर्ग जाने का कोई भी जानते नहीं हैं। स्वर्ग अलग है शान्त धाम जहां आत्मायें रहती हैं वो अलग है। अभी बाप कहते हैं जागो। तुम रावण राज्य में पतित हो गये हो। इस समय सभी भ्रष्टाचारी पापात्मायें हैं। एक भी पवित्र आत्मा नहीं हो सकती। पुण्यात्मा नहीं कहेंगे। भले मनुष्य दान पुण्य करते हैं। परन्तु पवित्रात्मा तो एक भी नहीं है। पतित आत्मायें यहां हैं कलियुग में हैं। पवित्र आत्मायें हैं सतयुग में। इसी लिये कहते हैं:- हे शिव बाबा हमको आकर पावन आत्मा बनाओ। पुण्य दान को कहा जाता है। यह पवित्रता की बात है। इस समय बाप आकर तुमको अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान देते हैं। कहते हैं तुम भी औरों को दान देते रहो तो पांच विकारों का ग्रहण छूट जावे। पांच विकारों का दान दो तो दुःख का ग्रहण छूट जावे। पवित्र बन सुख धाम में चले जावेंगे। पांच विकारों में नम्बरवन है काम। उसको छोड़ पवित्र बनो। खुद भी कहते हैं:- हे पतित पावन हमको आकर पावन बनाओ। पतित विकारी को कहा जाता है। अभी भारत वेश्यालय हो गया है। बाप कहते हैं मैं फिर आया हूं शिवालय बनाने। यह खेल है सुख और दुःख का। भारत के लिए ही खेल है। बाप भारत में ही आकर साधारण तन में प्रवेश करते हैं। फिर उनकी भी बायोग्राफी बैठ सुनाते हैं। यह है सभी ब्राह्मण ब्राह्मणियां प्रजापिता ब्रह्मा की औलाद। तुम सबको पवित्र बनने की युक्ति बताते हैं। ब्रह्मा कुमार और कुमारियां, तो तुम विकार में जा नहीं सकते हो। तुम ब्राह्मणों का यह एक ही जन्म है। देवता वर्ण में तुम 2। जन्म लेते हो। वैश्य शूद्र वर्ण में 63 जन्म लेते हो। ब्राह्मण वर्ण का यही एक अन्तिम जन्म है जिसमें ही पवित्र बनना है। बाप कहते हैं पवित्र बनो और बाप को याद अथवा योगबल से विकर्म भस्म करो। यही एक अन्तिम जन्म पवित्र बनना है। सतयुग में तो कोई पतित होता ही नहीं। अभी इस अन्तिम जन्म में तुम पावन बनेंगे तो 2। जन्म पावन ही बने रहेंगे। पावन थे। अभी पतित बने हो। पतित हो तब तो बुलाते हो ना। पतित किसने बनाया है? रावण की आसुरी मत ने। साधु सन्त आदि जो भी मत देते हैं उसको आसुरी मत कहा जाता है। यह है ही रावण राज्य। सबकी भ्रष्ट मत है। इसलिये इनको भ्रष्टाचारी देवताओं को श्रेष्टाचारी कहा जाता है। तो यह है नया रस्ता। सिवाय मेरे तुम बच्चों को रावण राज्य से, दुःख से कोई भी लिबरेट नहीं कर सकते। सभी काम चिता पर बैठ भस्म हो गये हो। मुझे आकर ज्ञान चिता पर बिठाना पड़ता है। ज्ञान जल डालना पड़ता है। सबकी सद्गती करनी पड़ती है। जो आकर पढ़ते हैं उनकी ही सद्गती होती है। बाकी सब चले

जाते है। शान्ती धाम में। सतयुग में सिर्फ देवी देवतायें होते है। उनको ही सदगती मिलती है। बाकी सब
अथवा मुक्ति धाम में होते है। 5000वर्ष पहले इन देवी देवताओं का राज्य था। लाखों वर्षों की तो बातें ही
नही। यह तो गपोड़े लगा देते है। अबबाप कहते है मीठे-2 बच्चों मुझ बाप को याद करो। मनमनाभव अक्षर
तो प्रसिध है। भगवानोवाच्य भगवान कोई कृष्ण नही है। शिव बाबा आकर कृष्ण की आत्मा जो कि
पवित्र थी, फिर 84जन्म लेकर पतित बनती है उनको भी पवित्र बनाता हूँ। 84जन्मों में नाम रूप देश
काल सब बदल जाते है। तुम्हारे भी हर जन्म में फीचर्स बदलते आते है। आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती
है। कभी स्त्री कभी पुरुष बन जाते है। यह ड्रामा प्लान अनुसार नूंध है। एक जन्म ना मिले दूसरे से। फिर
तुम्हारा यही जन्म रिपीट होगा तो फिर एक्यूरेट यही फीचर्स होंगें। यह ड्रामा अनादी बना बनाया है।
यह बदल नही सकता। जो-2 शरीर 84जन्मों में मिले है वही फिर मिलते रहेंगें। श्रीकृष्ण को जो शरीर
सतयुग में था वही फिर वहां मिलेगा। वो आत्मा तो अभी यहां है। अभी तुम जानते हो हम सो बनेंगें।
यह ल न. के फीचर्स एक्यूरेट नही है। बनेंगें फिर वही। यह बातें नया कोई समझ नही सकते है। अच्छी
रीत जो किसीको समझाओ तब 84का चक्र समझ सकेंगें। और समझेंगें बरोबर हर एक जन्म में नाम रूप फीचर्स
आद अलग होंगें। अभी इनके अन्तिम 84वें जन्म के फीचर्स यह है। इसलिये लगभग थोड़ा दिखाया है।
नही तो मनुष्य समझ नही सकते हैं। तुम बच्चे जानते हो यह भी बाबा ही फिर यह(ल न)बनते हैं।
यहां तो पांच तत्व पवित्र है नही। यहां शरीर है सब पतित, सतयुग में शरीर भी सब पावन होते है।
कृष्ण को मोस्ट ब्यूटीफुल कहते है। नैचुरल ब्यूटी होती है। यहां विलायत में भले गोरे मनुष्य है।
परन्तु उनको देवता थोड़ी कहेंगें। दैवी गुण तो नही है ना? तो बाप कितनी अच्छी रीती बैठ समझाते है।
अभी है ऊच ते ऊच पढ़ाई। जिससे ही तुम्हारी कितनी ऊची कमाई होती है। अनगिणत धन। वहां तो
हीरों जवाहरों के महल थे। अभी वो सब गुम हो गये है। अपरमअपार कमाई है 21 जन्मों लिये। इसमें
बहुत-2 मेहनत चाहिये। देहीअभिमानी बनना है। हम आत्मा है। यह पुराना शरीर छोड़ अब वापस अपने
घर नंगे ही जाना है। बाप अभी से लेने आये है। हम आत्मा ने 84जन्म अभी पूरे किये है। अभी फिर
पावन बनना है। बाप को याद करना है। नही तो कयामत का समय है सजायें खाकर वापस चले जावेंगें।
हिसाब किताब तो सभी को चुक्तु करनी ही है। भक्ति मार्ग में काशी कलवट खाते थे तो भी कोई मुक्ति
को नही पाते थे। वो है भक्ति मार्ग। यह है ज्ञान मार्ग। इसमें जीव घात करने की बात ही नही रहती।
वो है जीवघाती। फिर भी भावना रहती है कि मुक्ति को पावें। इसलिये पापों का हिसाब किताब, चुक्तु
हो फिर नयें सिर चालू होते है। अभी तो कोई मुश्किल साहस धरते है। बाकी मुक्ति वा जीवन मुक्ति नही
मिल सकती। बाप बिना मुक्ति जीवन मुक्ति कोई देही नही सकते है। द आत्मायें आत्मा ही रहती है फिर
वापस कैसे जावेंगें। बाप ही आकर सबकी सदगती कर वापस ले जावेंगें। सतयुग में बहुत थोड़े मनुष्य
होते है, आत्मा तो कब विनाश नही होती। आत्मा अविनाशी है। शरीर विनाशी है। सतयुग में आयु भी
बड़ी होती है। दुःख की बात नही रहती। एक शरीर छोड़ दूसरा ले लेते है। जैसे सर्प का मिसाल। एक
खाल छोड़ दूसरी लेते है उसको कोई मरना नही कहा जाता। दुःख की बात ही नही। समझते है अभी स
पूरा हुआ है। एक शरीर छोड़ दूसरा लेते है। यह अभ्यास यही डालना है। हम आत्मा है। अब हमको घर जा
है। फिर नई दुनियां में आवेंगें। नया खेल मिलेगा। फिर दिन प्रति दिन कला कम होती जाती है। 84श
लेते है। मनुष्यों ने फिर 84लाख कह दिये है। मेरे को फिर अनगिणत पत्थर भित्तर ठिक्कर में ठोक दिया है
इसको कहा जाता है धर्म की ग्लानी। मनुष्य स्वच्छ बुधी से बिलकुल ही तुच्छ बुधी बन जाते हैं। अभी
बाप तुमको स्वच्छ बुधी बनाते है। स्वच्छ बनते है याद में। बाप कहते है अब नवयुग आता है। उसकी
निशानी यह महाभारत लड़ाई है। यह वो ही मुसलों वाली लड़ाई है। जिसमें अनेक धर्म विनाश एक धर्म

की स्थापना हुई थी। तो जरूर भगवान होगा नां। कृष्ण यहां कैसे आ सकते है। ज्ञान का सागर निराकार है, वो कृष्ण? कृष्ण को तो यह ज्ञान ही नही होगा। यह ज्ञान ही गुप्त हो जाता है। तुम्हारे भी फिर भक्ति मार्ग में चित्र बनेंगे। रूद्र पूजा होगी। भक्ति मार्ग ही है पुजारी मार्ग। तुम ही पूज्य फिर पुजारी बनते हो। कला कम होती जाती है। क्यों कि भोगी बन जाते है। वहां है योगी। ऐसे नही किसीकी याद में योग लगाते है वहां है ही पवित्र। कृष्ण को भी योगेश्वर कहते है। इससमय कृष्ण की आत्मा बाप के साथ योग लगा रही है। कृष्ण की आत्मा इस समय योगेश्वर है। सतयुग में योगेश्वर नही कहेंगे। वहां तो प्रिन्स बनते है। तुम्हारी पिछाड़ी में ऐसी अवस्था रहनी चाहिये कि सिवाय बाप कीयाद के और कोई शरीर की याद नही आवें। शरीर से और पुरानी दुनिया से ममत्व मिट जावें। सन्यासी रहते तो पुरानी दुनिया में है, परन्तु घर बार से ममत्व तोड़ देते है। ब्रह्म को ईश्वर समझ उससे योग लगाते हैं। अपने को ब्रह्म ज्ञानी, तत्वज्ञानी कहते है। समझते है हम ब्रह्म में लीन हो जावेंगे। बाप कहते हैं वो सब रांग है। राइट तो मैं हूं। मुझे ही ट्रुथ कहते है। तो बाप समझाते है याद की यात्रा बड़ी पक्की चाहिये। ज्ञान तो बहुत आसान है। देही-अभिमानी बनने में है मेहनत। बाप कहते है किसीकी भी देह को याद नही करो। वो है भूतों की याद। भूत पूजा, भूतयाद हो गई। मैं तो अशरीरी हूं तुम्हें याद करना है मुझे। इन आखों से देखते हुये बुधी से बाप को याद करना है। बाप के डायरेक्शन पर नही चलेंगे तो धर्मराज पापों की बहुत सजायें देंगे। पावन बनेंगे तो सजायें खत्म हो जावेगी। बड़ी भारी मंजिल है। प्रजा बनना तो बहुत सहज है। उसमें भी शाहुकार प्रजा। गरीब प्रजा, कौन-2 बन सकते है। सब समझते हो। पिछाड़ी में तुम्हारी बुधी का योग रहना चाहिये बाप से और घर से। जैसे एक्टिस का नाटक में पार्ट पूरा होता है तो बुधी चलीजाती है घरमें। यहां है बेहद की बात। वो होती है हद की आमदनी। यह है बेहदकी आमदनी। अच्छे एक्टर्स की आमदनी भी बहुत होती है। तो बाप कहते है घर गृहस्थ व्यवहार में रहते बुधी का योग वहां लगाना है। वो आशिक माशूक होते है एक दो के। यहां तुम सभी आशिक हो एक माशूक के। उनको ही सब याद करते है। वण्डरफुल मुसाफिर है नां। इस समय आये है सभी दुखों से छुड़ाने सदगती में ले जाने। इसको कहा जाता है सच्चे माशूक। वो एक दो के शरीर पर आशिक होते है। विकार की बात नही। इसको कहा जाता है देह अभिमान का योग। वो भूतों की याद हो गई। मनुष्यों को याद करना माना पांच भूतों को याद करना तथा प्रकृती को याद करना। बाप भी कहते है प्रकृती को भूल मुझे याद करो। मेहनत है नां। और फिर देवी गुण भी चाहिये। कोई से वैर लेना यह आसुरी गुण है। सतयुग में होता ही है एक धर्म। वैर की बात नही। वो है ही अदवेत देवता धर्म। सो शिव बाबा बिना और कोई स्थापना कर नही सकते। कृष्ण तो है मनुष्य। सूक्ष्म वतन वाली देवताओं को फरिश्ता कहते। इस समय तुम हो ब्राह्मण फिर फरिश्ता बनेंगे। फिर वापस चले जावेंगे घर। फिरनई दुनिया में आकर मनुष्य बनेंगे। अभी शुद्र से ब्राह्मण बनते हो। प्रजापिता ब्रह्मा का बच्चा नां बनें तो वर्सा कैसे लेंगे। यह प्रजापिता ब्रह्मा और मम्मां। वो फिर ल.ना. बनते है। अब देखो तुमको जैसे लोग कहते है हमारा जैनी धर्म सबसे पुराना है। अब वहतक में आदी देव तो ब्रह्मा को कहते है नां। है ब्रह्मा ही। परन्तु कोई जैनी मुनी आया तो उसमें महावीर नाम रख दिया। अभी तुम सब महावीर हो नां। तुम माया पर जीत पा रहे हो। तुम बन्दर मिसल थे। अभी बदल रहे हो। तुम सभी से बहादुर बनते हो। सच्चे-2 महावीर महावीरणियां तुम हो। अन्दर हाथियों पर महारथी बैठे है। है वो जिन्होंने माया पर जीत पाई है। महावीरणी को शेर पर बिठाया है। तुम्हारा नाम है शिव शक्ति। शेर पर सवारी है। और महारथियों को हाथी पर। यह सब बातें बाप समझाते रहते है। फिर भी बाप कहते है बड़ी भारी मंजिल है। एक बाप को ही याद करना है। तो विकर्म विनाश होवें। और कोई रस्ता नही है। (बाकी फिर देखेंगे) ओम शान्ती